ओमशान्ति मीडिया

OM SHANTI GLOBAL FAMILY
PLATINUM JUBILEE
75
BRAHMAKUMARIS
2011

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 13 अंक - 12 सितम्बर - II, 2012 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

दिल्ली, ओ.आर.सी। विश्व कल्याण परिषद के अध्यक्ष जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओमकारानंद सरस्वती महाराज से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए दादी हृदयमोहिनी।

दादीजी की स्मृति दिवस पर युवाओं ने लिया दृढ़ संकल्प

दादी की पांचवीं स्मृति दिवस के अवसर पर देश के भिन्न-भिन्न भागों से आए हुए युवाओं ने विविधता में एकता की तस्वीर प्रस्तुत की। इस अवसर पर 1200 से अधिक युवाओं ने मानव सेवा हेतु स्वेच्छा से रक्तदान किया और पर्यावरण को हरा-भरा बनाये रखने के उद्देश्य से 10,000 पौधे लगाए तथा उन्हें संरक्षित रखने का संकल्प लिया। युवा प्रभाग की ओर से इस अवसर पर युवाओं के व्यक्तित्व का विकास करने के उद्देश्य से अनेक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख हैं क्वीज प्रतियोगिता, पावर प्रजेंटटेशन, टैलेंट सांग, नृत्य प्रतियोगिता, चुनौतियों का सामना कैसे करें आदि.. आदि। विश्व बंधुत्व दिवस के अवसर पर लोगों ने नियमित राजयोग का अभ्यास करने, शाकाहार रहने तथा दादीजी के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

शांतिवन। दादीजी की 'स्मृति दिवस' के अवसर पर भाग लेने आए संत-महात्मा।

सपनों को साकार करने का संकल्प

(विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई दादी प्रकाशमणि की 5 वीं पुण्य तिथि)

शांतिवन। हाथ में दादी की यादों के झंडे, मौन की भाषा, कतारबद्ध होकर अपनी बारी का इंतजार करते लोगों के चेहरे पर श्रद्धांजलि का भाव सहज ही नजर आ रहा था। यह दृश्य था शांतिवन परिसर में संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की 5 वीं पुण्यतिथि पर आयोजित 'सद्भावना एवं विश्व बंधुत्व' दिवस में भाग लेने आए देश-विदेश से हजारों युवाओं का।

इस कार्यक्रम में मुम्बई के पाश्रव गायक ओम व्यास, राजकोट के स्वामी नित्यानंद महाराज समेत कई विशिष्ट अतिथियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दादी के सपनों को साकार करने का संकल्प लिया। मौन रहकर पूरे विश्व में सद्भावना और विश्व बंधुत्व की भावना लाने की प्रार्थना की। दादीजी को श्रद्धा सुमन के पुष्प अर्पित करने के पश्चात् संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि दादी प्रकाशमणि ने जब इस संस्था की कमान संभाली थी तब एक छोटे से कारवां से इसकी शुरुआत की थी। उनके कुशल निर्देशन में यह संस्था आज पूरी दुनिया में फैल गयी है। इसके साथ ही उन्होंने माताओं व बहनों को शक्ति स्वरूपा बनाकर विश्व के सामने एक ऐसी मिशाल प्रस्तुत की जो आज पूरी दुनिया को सोचने के लिए मजबूर कर देती है। हमें इस पुण्यतिथि पर दादी के गुणों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

शांतिवन। दादीजी को श्रद्धांजलि देने के लिए देश भर से आये भाई-बहनें।

कोल्हापुर से आए शिवसेना के विधायक राजेश क्षीरसागर ने कहा कि विश्व बंधुत्व का जो बीज यहां से बोया जा रहा है। वह पूरी दुनिया में फैल रहा है और इससे निश्चय ही देश के भविष्य के लिए सुखद सवेरा आयेगा।

शांतिवन। दादीजी को 'श्रद्धा-सुमन' अर्पित करते हुए दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.सुनी बहन, ब्र.कु.मोहिनी बहन तथा अन्य।

संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि दादीजी का प्रयास सभी वर्गों के लोगों को एक साथ जोड़कर मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करना था जिसके लिए वो पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गयी।

इस अवसर पर युवाओं ने स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करने की प्रतिज्ञा के साथ संकल्प पत्र भरकर दान पात्र में डाले तथा परिसर में रखे फ्लैक्स बैनर पर सभी ने अपने हस्ताक्षर कर सहमति प्रदान की।

दादीजी का नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में हुआ दर्ज - संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी की 5 वीं

शेष पृष्ठ 11 पर

सामाजिक भेदभाव की भावनाओं से ऊपर उठें

ज्ञानसरोवर। विश्व को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए सामाजिक भेदभाव की भावनाओं से ऊपर उठकर आपसी स्नेह और सहयोग की भावना से कार्य करना होगा।

उक्त उद्गार बुद्धिस्ट महासभा, दिल्ली के अध्यक्ष भन्ते करूणाकरण महाथेरा ने ब्रह्माकुमारीज़ के धार्मिक प्रभाग द्वारा ज्ञानसरोवर परिसर में ''आध्यात्मिक शक्ति द्वारा विश्व शांति'' विषय पर आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य की यह जिम्मेदारी है कि वह स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ दूसरों के लिए भी शुभभावना रखे तभी श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी। उन्होंने कहा कि स्वार्थ की भावना से इंसानियत व मानवता के मूल्यों का पतन हो रहा है। समाज से वैर, नफरत, हिंसा को समाप्त करने के लिए आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाना होगा। विश्व शांति स्थापन करने के लिए सभी धर्मावलम्बियों को एकजुट होकर प्रयास करना होगा।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि अज्ञान अंधकार में भटके हुए मानव को ज्ञान प्रकाश का मार्ग दिखाकर श्रेष्ठ कर्म का बोध कराना धर्माचार्यों का प्रथम कर्तव्य है। उन्होनें कहा कि त्याग वृति से संपन्न मानव ही प्रभू प्रिय बनता है।

कुरूक्षेत्र से आए स्वामी ओमकारानंद ने कहा कि ईश्वरीय शिक्षा को जीवन में लाने के लिए साधना जरूरी है। साधन, साधना और साधनों का संतुलन रखने से जीवन को एक नई दिशा मिलती है। राजकोट से आए स्वामी विज्ञानंद ने कहा कि जब तक मनुष्य भौतिकता का आवरण अपने मन से नहीं हटाता तब तक वह आत्मा के स्वरूप को देख नहीं पाता है। दिल्ली से आए भारत साधु समाज के महामंत्री महेश शर्मा ने कहा कि व्यक्ति चाहे हिंदु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई चाहे किसी भी संप्रदाय का हो यदि वह अपनी सच्ची धार्मिकता के आचरण पर स्थिर रहता है तो समाज के सभी वर्गों को एकमत होने में देर नहीं लगेगी।

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, स्वामी प्रेमानंद, भंते करूणाकरण, स्वामी नीरजानंद सरस्वती, ब्र.कु.करूणा, ब्र.कु.रामनाथ एवं ब्र.कु.मनोरमा बहन।

धार्मिक सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.मनोरमा ने कहा कि जब तक मनुष्य के अंदर भौतिक व बाह्य कामनाएं जीवित है तब तक उसे आत्मा व परमात्मा की अनुभूति हो नहीं सकती है।

शेष पृष्ठ 11 पर